Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य महाकवि कालिदास के महाकाव्य में

डॉ0 अनिता सेनगुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
ईश्वर शरण पी0जी0 कॉलेज,
प्रयागराज

शोध आलेख सार– हिंसामय वातावरण को पुनः सुख–शान्ति की ओर परिणत करने के लिए भारतीय संस्कृति में वर्णित संस्कारों का, जिनका प्रयोग महाकवि कालिदास ने रघुवंश में किया, इसका अनुपालन कर हम अग्रिम पीढ़ी को संस्कारित कर सकते हैं।

मुख्य शब्द– भारतीय, संस्कृति, महाकवि कालिदास, महाकाव्य, संस्कार।

सम् उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से घञ् प्रत्ययन के योग से ''संपरिभ्यां करोती भूषणे'' भूषण अर्थ में सुट् का आगम होकर 'संस्कार' शब्द की निष्पत्ति होती है। इसका अभिप्राय है– संस्करण, परिष्करणादि। इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, व्याकरण की शुद्धि, शोभा तथा आभूष्वणादि अनेक अर्थों में हुआ। संस्कारों का उद्देश्य मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार था। संस्कारों द्वारा जीव के जन्मजन्मान्तरों से संचित मलों को दूर किया जाता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में बालक के गर्भ में आने से लेकर मृत्युपर्यन्त विविध संस्कारों का विधान किया गया है। याज्ञवल्क्यस्मृति के अनुसार–

''ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रवर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः।

निषेकाद्याः श्मशानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रियाः।।[1]

धर्मशास्त्रकारों ने मुख्यरूप से गर्भाधानादि से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त कुल सोलह संस्कारों को मान्यता प्रदान की है–

''आधानं पुंस्वनं सीमन्तोन्नयनं जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं चौलां उपनयनम् ....''[2]

सोलह प्रधान संस्कारों में प्रथम तीन– गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन और पुंसवन् प्राग–जन्म संस्कार कहे जा सकते हैं। शिशु के जन्म से लेकर विद्यारम्भ के पूर्व तक छः संस्कार प्रमुख होते हैं– जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन चूड़ाकर्म तथा कर्णवेध। विद्यारम्भ से लेकर समावर्तन तक पाँच संस्कारों को शैक्षणिक संस्कार कहा जा सकता है।

व्यक्ति के जीवन को अनुशासित किया जाना उसकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक था, जिसकी पूर्ति संस्कारों के अनुष्ठान से होती थी।

संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य रघुवंश ''संस्कारों के परिपालन दृष्टि'' से सर्वदउा उपादेय है और रहेगा। रघुवंश के नायक महानायक ''रघु'' मनु द्वारा अनुमोदित अधिकांश संस्कारों का परिपालन कर समाज को एक स्वस्थ दृष्टि प्रदान करते हैं–

गर्भाधान संस्कार –

जिस कर्म की पूर्ति से पुरुष स्त्री में अपना बीज स्थापित करता है, उसे गर्भाधान कहते हैं। धर्मशास्त्रकारों ने विधिपूर्वक किए गए गर्भाधान संस्कार द्वारा सुयोग्य सन्तान की उत्पत्ति को स्वीकार किया है। इस संस्कार द्वारा वीर्य तथा गर्भ सम्बन्धी दोषों का परिमार्जन एवं क्षेत्र का संस्कार माना गया है–

गार्भैहोमैर्जातकर्मचौडमौजीनिबन्धनैः।

वैजिकं गार्भिकं चैवो द्विजानामपमृज्यते।।[3]

आचाय सुश्रुत के अनुसार गर्भाधान के समय स्त्री पुरुष के भावनाओं का उनके रज तथा वीर्य दोनों पर प्रभाव पड़ता है–

आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिः समंन्वितौ।

स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोः पुत्रोपि तादृशाः।।[4]

संभवतः इसी भावना से परिचित महाकवि कालिदास ने भी रघुवंशम् में राजा दिलीप और सुदक्षिणा को महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में गोसेवा के लिए भेजा, जिससे दोनों राष्ट्र को रघु जैसा ही जितेन्द्रिय पुत्र प्रदान कर सके। इसलिए महाकवि कालिदास ने राधा रघु अपनी धर्मपत्नी सुदक्षिणा के साथ वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए इन्द्रिय निग्रहपूर्वक नन्दिनी गो की सेवा करवाते हैं। परिणामतः रघु का चक्रवर्ती लक्षणों से संपन्न पुत्र होना निश्चित था।[5] यह गर्भाधान संस्कार का ही परिणाम था।

पुंसवन् संस्कार

गर्भधारण के पश्चात् गर्भस्थ शिशु को ''पुंसवन् संस्कार'' द्वारा अभिषिक्त किया जाता था। इसमें यह प्रार्थना की जाती थी कि पुमान् (पुरुष) सन्तति का जन्म हो। वैदिककाल में आर्यों को युद्ध के लिए पुरुषों की आवश्यकता पड़ती थी। इसीलिए तभी से यह लोकप्रिय संस्कार था। साधारणतः यह तीसरे से आठवें मास के बीच में संपन्न

किया जाता था। महाकवि ने गर्भिणी रानी सुदक्षिणा का भी पुंसवन् संस्कार करवाकर उसके महत्व से परिभाषित करवाया–

''यथाक्रमं पुंसवनादिकाः क्रिया धृतेश्च धीरः सदृशीर्व्यधत्तः सः।''[6]

धर्मशास्त्रग्रंथों में पुत्र प्राप्ति हेतु पुंसवन् संस्कार का विधान बताया गया है।[7] ऐसी मान्यता है कि पुत्र ही पिता का पुम् नामक नरक से रक्षा करता है। इसी भावना की अभिव्यक्ति महाकवि ने प्रथमसर्ग में की है–

''संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह शर्मणे।''[8]

राजा दिलीप पितृऋण से मुक्ति हेतु भी पुत्र रत्न की प्राप्ति की कामना अपने कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ से करते हैं–

तस्मान्मुच्चे यथा तात संविधातुं तथार्हसि।

इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः।।[9]

तत्कालीन समाज में पुत्रप्राप्ति की मान्यता थी इसलिए कवि ने राजा दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा के पुंसवन् संस्कार की मान्यता को परिपुष्ट किया।

सीमन्तोन्नयन संस्कार

इसमें गर्भिणी के केशों को अमंगलकारी शक्तियों से बचाने के लिए ऊपर उठाया जाता था। इसका उद्देश्य माता के ऐश्वर्य तथा शिशु के लिए दीर्घायु की प्राप्ति था। यह संस्कार गर्भावस्था के आठवें माह तक किया जा सकता था।

जातकर्म संस्कार

यह संस्कार साधारणतः जन्म से उत्पन्न अशौच का समय व्यतीत हो जाने के पश्चात् किया जाता था। इस अवसर पर शिशु के आयुष्य तथा बल के लिए प्रार्थना की जाती थी। इस संस्कार में बालक का जन्म होते ही नालोच्छेदन से पूर्व स्वर्णशलाका से शहद एवं घी लगाकर मन्त्रोच्चारपूर्वक चटाया जाता है–

प्राङ्नाभिवर्धनात्पुंसो जातकर्म विधीयते।

मन्त्रवत्प्राशनं चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम्।।[10]

आयुर्वेद की दृष्टि से स्वर्ण त्रिदोषनायक, धृत आयुवर्धक तथा वातपित्तनाशक तथा मधु कफ नाशक माना गया है। इन तीनों का मिश्रण आयु, लावण्य तथा मेधाशक्ति में वृद्धि करने वाला तथा पवित्रता का आधान करने वाला होता है। इस संस्कार से संपन्न होने के पश्चात् बालक रघु खान से निकले हुए हीरा के समान सुंदर दीख रहे हैं–

स जातकर्मण्यखिलो तपस्विनां तपोवनादेत्य पुरोधसा कृते।

दिलीप सूनुर्मणिराकरोदभवः प्रयुक्तसंस्कार श्वाधिकं बभौ।।[11]

नामकरण संस्कार

यह संस्कार शिशु जन्म के 10वें या 12वें दिन संपन्न किया जाता था। आचार्य मनु आयु, तेज की वृद्धि एवं लौकिक व्यवहार की सिद्धि के लिए ''नामकरण संस्कार'' का विधान करते हैं।[12] साथ ही मनुस्मृति में यह भी उल्लिखित है कि क्षत्रिय को बल से युक्त होना चाहिए–

''क्षत्रियस्य बलान्वितम्''[13]

कालिदास ने भी रघु का नामकरण 'रधि' धातु के 'जान' अर्थ को दृष्टि में रखकर कराया है–

''अवेक्ष्य धातोर्गमनार्थमर्थविच्चकार नाम्ना रघुमात्मसम्भवम्।।''[14]

निष्क्रमण संस्कार

शिशु के कुछ बड़ा हो जाने पर उसे घर के बाहर ले जाया जाता था। यह साधारणतः जन्म के बाद तीसरे या चौथे मास में सम्पादित किया जाता था। महाकवि ने इस संस्कार का कोई उल्लेख नहीं किया।

अन्नप्राशनसंस्कार का भी रघुवंश में कोई उल्लेख नहीं प्राप्त होता।

चूड़ाकर्म संस्कार

इसका प्रयोजन दीर्घायु तथा कल्याण था। यह संस्कार प्रथम वर्ष के अन्त में या तृतीय वर्ष की समाप्ति पर किया जाता था।

विद्यारम्भ संस्कार से लेकर समावर्तन तक पाँच संस्कारों को शैक्षणिक संस्कार कहा जाता सकता है।

''यज्ञोपवीत संस्कार'' के बाद ही बालक को वेदाध्ययन, गायत्री जप तथा श्रौत एवं स्मार्तकर्मों को करने का अधिकार प्राप्त होता है–

अथोपनीतं विधिवद्विपश्चितो विनिन्युरेनं गुरवो गुरुप्रियम्।

अबन्ध्ययत्नाश्च बभूवुरत ते क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति।।[15]

उपनयन संस्कार

इस संस्कार के द्वारा बालक आचार्य के समीप लाया जाता था। आचार्य वेद–विद्या की शिक्षा देते थे। साधारणतः यह नियम था कि ब्राह्मण का उपनयन आयु के 8वें वर्ष, क्षत्रियों का 11वें वर्ष तथा वैश्य का बारहवें वर्ष होना चाहिए। इस संस्कार के बाद ही रघु ने योग्य पंडितों से सभी विधाओं का अध्ययन किया। जिसमें वेदारंभ संस्कार भी अभिव्यंजित है। वेदाद्रि विद्याओं के अध्ययन से मनुष्य के पापों का नाश होता है तथा उसे सम्पूर्ण सिद्धियों की प्राप्ति होती है[16]–

विद्यया लुप्यते पापं विद्ययायुः प्रवर्धते।

विद्यया सर्वसिद्धिः स्याद् विद्ययामृतमश्नुते।।

इसी संस्कार के कारण रघु चारों समुद्रों के समान विस्तृत आन्नीक्षकी, त्रयी, वार्ता तथा दण्डनीति आदि चारों विधाओं को भी सीख लिया[17]–

केशान्त संस्कार या गोदान संस्कार

यह संस्कार 16वें वर्ष की आयु में सम्पन्न होता था तथा यौवन के आगमन का सूचक था। विवाह संस्कार से पूर्व महाकवि गोदान संस्कार का विधान करवाते हैं–

अथास्य गोदानविधेरनन्तरं विवाहदीक्षां निरर्वायद् गुरुः[18]

समावर्तन संस्कार

यह संस्कार ब्रह्मचर्य तथा विद्यार्थी जीवन के समाप्त होने का सूचक था। यह संस्कार एक प्रकार से विवाह का अनुमति पत्र होता था।

हिन्दू जीवन का अंतिम संस्कार अन्त्येष्टि है। महाकवि ने इस संस्कार को अति महत्व दिया है। जटायु के मरने पर भी विधिवत दाह संस्कार कराकर श्राद्धादि क्रियाओं को समादित कराते हैं।[19]

इस हिंसामय वातावरण को पुनः सुख–शान्ति की ओर परिणत करने के लिए भारतीय संस्कृति में वर्णित संस्कारों का, जिनका प्रयोग महाकवि कालिदास ने रघुवंश में किया, इसका अनुपालन कर हम अग्रिम पीढ़ी को संस्कारित कर सकते हैं।

सन्दर्भ

1.याज्ञवल्क्य स्मृति–10

2.व्यास स्मृति–1/13–15

3.मनुस्मृति–2/27

4.सुश्रुत – शरीरस्थान–2/46

5.रघुवंश–2/75

6.रघुवंश–3/10

7.गर्भाद् भवेच्च पुंसूते पुंस्त्वरूपप्रतिपादनम् (स्मृतिसंग्रह)

8.रघुवंशम्–1/69

9.रघुवंशम्–1/72

10.मनुस्मृति–2/29

11.रघुवंश–3/18

12.मनु–2/30

13.मनु–2/31

14.रघु–3/21

15.रघु–3/29

16.स्मृति संग्रह

17.रघु–3/30

18.रघु–3/33

19.रघु–12/56